



Atharva Veda Kand 3

### अथर्ववेद 3.16.1 प्रातःकालीन प्रार्थनाएँ

प्रातरग्निं प्रातरिन्द्रं हवामहे प्रातर्मित्रावरुणा प्रातरश्विना ।  
प्रातर्भगं पूषणं ब्रह्मणस्पतिं प्रातः सोममुत रुद्रं हवामहे ॥1॥

(प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (अग्निम्) सर्वोच्च ऊर्जा, परमात्मा, प्रथम अग्रणी, अग्नि, ताप, ऊर्जावान, बुद्धिमान (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय से पूर्व का समय (इन्द्रम्) सर्वोच्च नियंत्रक को (हवामहे) हम बुलाते हैं, आह्वान करते हैं (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (मित्रा) मित्र (वरुणा) शासक (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (अश्विना) जोड़ा (दिव्य शक्तियों का, सूर्य और चन्द्रमा का, अग्नि और जल का, गुरु और शिष्य का, प्राणों का) (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (भगम्) सुखों, वैभव और महिमा आदि के दाता को (पूषणम्) पोषण करने वाले को (ब्रह्मणः पतिम्) परमात्मा और इस सृष्टि के ज्ञान के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक को (प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (सोमम्) शुभ गुणों और दिव्य ज्ञान को (उत) और (रुद्रम्) रुद्र को, न्याय का स्वामी जो सभी बुराईयों को रोकने के लिए मजबूर करके उन पर नियंत्रण करता है (हवामहे) हम बुलाते हैं, आह्वान करते हैं ।

नोट: यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.1 केवल एक शब्द के अन्तर के साथ ऋग्वेद 7.41.1 तथा यजुर्वेद 34.34 के समान है। ऋग्वेद 7.41.1 तथा यजुर्वेद 34.34 में अन्तिम शब्द 'हुवेम' आया है जिसका अर्थ है प्रशंसा करना और महिमागान करना ।

व्याख्या:-

प्रातःकाल सूर्योदय के समय किन दिव्य शक्तियों की प्रशंसा और उनका आह्वान किया जाना चाहिए? प्रातःकाल सूर्योदय के समय मैं सर्वोच्च ऊर्जा के स्रोत तथा सर्वोच्च नियंत्रक को बुलाता हूँ, आह्वान करता हूँ। मैं परमात्मा को अपने मित्र की तरह आह्वान करता हूँ; अपने शासक की तरह; जोड़े की तरह (दिव्य शक्तियों का, सूर्य और चन्द्रमा का, अग्नि और जल का, गुरु और शिष्य का, परमात्मा और इस सृष्टि के ज्ञान के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक को); सभी सुखों, वैभव और महिमा देने वाले की तरह; पोषक तत्वों की तरह; इस सृष्टि के सर्वोच्च स्वामी और संरक्षक की तरह; शुभ गुणों, दिव्य ज्ञान, सम्पदा और औषधियों की तरह; रुद्र की तरह, न्याय का स्वामी, जो सभी बुराईयों को रोकने के लिए मजबूर करके उन पर नियंत्रण करता है ।

जीवन में सार्थकता:-

हम दिव्यताओं के साथ कैसे जुड़ सकते हैं?

हमें इस मन्त्र का स्वाध्याय ऋग्वेद के 1.48 और 1.49 सूक्तों के साथ मिलाकर करना चाहिए, जो ऊषाकाल अर्थात् ब्रह्मवेला पर चर्चा करते हैं। इन सभी सूक्तों का संयुक्त अभ्यास निश्चित रूप से हमारी प्रातःवेला अर्थात् दिन के प्रारम्भ को दिव्यताओं से भर देगा ।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



यह मन्त्र सर्वोच्च ऊर्जा, सर्वोच्च नियंत्रक और सर्वोच्च स्वामी का आह्वान उसकी दिव्यताओं के साथ करता है, जो शक्तियाँ उसने भिन्न-भिन्न दिव्य शक्तियों को प्रदान की है। प्रतिदिन प्रातःकालीन वेला में नियमित रूप से इस सारे चिन्तन और प्रार्थनाओं के साथ हम इन दिव्यताओं के साथ सम्बद्धता महसूस कर सकते हैं।

### अथर्ववेद 3.16.2

प्रातर्जितं भगमुग्रं हवामहे वयं पुत्रमदितेर्यो विधर्ता।  
आध्रश्चिद्यं मन्यमानस्तुरश्चिद्राजा चिद्यं भगं भक्षीत्याह॥2॥

(प्रातः) प्रातःकालीन वेला, सूर्योदय का समय (जितम्) जीतने के योग्य (भगम्) सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले को (उग्रम्) चमक (हवामहे) हम बुलाते हैं, आह्वान करते हैं (वयम्) हम (पुत्रम्) पुत्रों के समान (अदितेः) अनाशवान और असीम माँ का, सनातन शक्ति (यः) जो (विधर्ता) सभी ब्रह्माण्डीय शरीरों को धारण करने वाला (आध्रः चित्) सबके द्वारा धारण किया गया, सब दिशाओं से (यम्) जिसे (मन्यमानः) जानते हुए, चिन्तन करते हुए (तुरः) शक्तिशाली वाणी (चित्) निश्चित रूप से (राजा) राजा (चित्) भी (यम्) जिसे (भगम्) सुखों, वैभव और महिमा आदि के दाता को (भक्षि) सेवा और प्रशंसा (इति) इस प्रकार (आह) बोलना, उपदेश देना।

नोट: यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.2 केवल एक शब्द के अन्तर के साथ ऋग्वेद 7.41.2 तथा यजुर्वेद 34.35 के समान है। ऋग्वेद 7.41.2 तथा यजुर्वेद 34.35 में 'हवामहे' के स्थान पर 'हुवेम' शब्द का प्रयोग हुआ है। जिसका अर्थ है प्रशंसा करना और महिमागान करना।

व्याख्या:-

क्या हमें सुखों की प्रार्थना करने का अधिकार है?

प्रातःकालीन वेला में अर्थात् सूर्योदय के समय हम चमक वाले सुखों, वैभव और महिमा को देने वाले को बुलाते हैं, आह्वान करते हैं, उसकी प्रशंसा और महिमागान करते हैं कि वह हमें जीतने योग्य सुखों को प्रदान करे क्योंकि हम उस अनाशवान और असीम माता के पुत्र हैं, सनातन शक्ति के पुत्र हैं जिसने सभी आकशीय शरीरों को धारण कर रखा है; जिसे सब लोग सब तरफ से धारण करते हैं; जिसे सब लोग जानते हैं और उस पर चिन्तन करते हैं, और जो निश्चित रूप से सभी लोगों और राजाओं की भी वाणी है। सुखों और वैभव के उस सर्वोच्च दाता की सेवा करो और प्रशंसा करो। अपनी प्रार्थनाएँ इसी प्रकार से बोलो और उपदेश करो।

जीवन में सार्थकता:-

इस सृष्टि का क्या उद्देश्य है?

मानवतावादी जीवन का क्या उद्देश्य है?

परमात्मा ने अनेकों निर्देशों और विचारों के साथ इस सृष्टि का निर्माण निश्चित रूप से सभी जीवों के भोग के लिए किया है। सृष्टि का भोग हमारा अधिकार है, क्योंकि हम सृष्टि निर्माता के पुत्र और पुत्रियों की तरह हैं, किन्तु यह भोगने और संग्रहण करने का कार्य हमारे जीवन का लक्ष्य नहीं होना

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



चाहिए। भोग को न्यूनतम सीमा में रखना चाहिए। जीवन का प्रधान उद्देश्य तो सब सुखों के दाता के साथ एक नियमित सम्बद्धता बनाये रखना होना चाहिए।  
 उसके अनुदानों को प्राप्त करने के लिए हमें यह सिद्ध करना होगा कि हम उन्हें प्राप्त करने के लिए योग्य और सक्षम हैं। यह योग्यता और सक्षमता एक राता की तरह शक्तिशाली और गतिशील कार्यों को करने से आती है। जैसे सबके कल्याण के लिए यज्ञ करने वाला करता है। इस प्रकार निःसंदेह सृष्टि का उद्देश्य भोग करना है, परन्तु इसकी योग्यता और सक्षमता केवल यज्ञ करने वाले के लिए है। क्योंकि केवल वही व्यक्ति अनुदानों का उत्तम और समान वितरण सुनिश्चित कर सकता है।

### अथर्ववेद 3.16.3

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्नः।  
 भग प्र णो जनय गोभिरश्वैर्भग प्र नृभिर्नृवन्तः स्याम॥३॥

(भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्रणेत) हमें उत्तम मार्ग की प्रेरणा देता है और उपलब्ध कराता है (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (सत्य राधः) सत्य की सम्पदा, सत्य सम्पदा अर्थात् परमात्मा का ज्ञान (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (इमाम्) यह प्रशंसनीय (धियम्) बुद्धि, विवेक (उत् अव) प्रगतिशील (ददत्) देते हुए (नः) हमें (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्र) सर्वोत्तम (नः) हमें (जनय) उत्पन्न करता है (गोभिः) गऊओं से, ज्ञानेन्द्रियों से (अश्वैः) अश्वों से, कर्मेन्द्रियों से (भग) सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (प्र) सर्वोत्तम (नृभिः) उत्तम मनुष्यों की सहायता से (नृवन्तः) सर्वोत्तम मानव (स्याम) होओ।

नोट :- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.3, ऋग्वेद 7.41.3 और यजुर्वेद 34.36 में समान है।

व्याख्या:-

हमें किस प्रकार की सम्पदा की प्रार्थना परमात्मा से करनी चाहिए?  
 सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले! हमें प्रगतिशील और प्रशंसनीय बुद्धि तथा विवेक देते हुए सत्य की सम्पदा या सत्य सम्पदा अर्थात् परमात्मा के ज्ञान वेद को प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम मार्ग की प्रेरणा दो और उपलब्ध कराओ।

सभी सुखों, वैभव और महिमा के देने वाले! हमारे अन्दर सर्वोत्तम गऊओं और अश्वों में से, सर्वोत्तम ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों में से सर्वोत्तम लक्षण पैदा करो। हम सर्वोत्तम मनुष्यों की सहायता से सर्वोत्तम मनुष्य बन सकें।

जीवन में सार्थकता:-

अपने जीवन को एक सच्चा मानव जीवन कैसे बनायें?

यदि आप सत्य की सम्पदा या सत्य सम्पदा को प्राप्त करना चाहते हो तो यह तरंगों के माध्यम से सीधा भगवान से प्राप्त होने वाला भगवान का ज्ञान है अर्थात् वेद। इस सत्य ज्ञान और विवेक को प्राप्त करने का एक ही मार्ग है ध्यान-साधना।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



दूसरा हम प्रगतिशील बुद्धि की प्रार्थना करते हैं जिससे सबके कल्याण के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के यज्ञ किये जा सकें। यह मानव जीवन का दूसरा स्तर है।

तीसरे स्तर पर, समाज से व्यवहार करते हुए हमें अपवाद समान सरल, गाय की तरह विनम्र होना चाहिए। हमारे कार्य त्वरित और अश्वों की तरह सक्रिय और ऊर्जावान होने चाहिए। हमें सत्यवादी होना चाहिए।

केवल इस प्रकार से ही हम अपने जीवन को एक सच्चा मानव बना सकते हैं जो दिव्यताओं, सुख, शांति और प्रगति से लदा हुआ हो।

### अथर्ववेद 3.16.4

उत्तेदानीं भगवन्तः स्यामोत् प्रपित्व उत्त मध्ये अह्नाम्।  
उतोदितौ मघवन्त्सूर्यस्य वयं देवानां सुमतौ स्याम।।4।।

(उत्त) और (इदानीम्) इस समय (प्रातःकालीन वेला) (भगवन्तः) सुखों, वैभव और महिमा के स्वामी (स्याम) बनो (उत्त) और (प्रपित्व) सर्वोत्तम सुखों को प्राप्त करते हुए (उत्त) और (मध्ये) बीच में (अह्नाम्) दिन के (उत्त) और (उदिता) उदय होने पर (मघवन्) सुखों का सर्वोच्च स्वामी (सूर्यस्य) सूर्य का (वयम्) हम (देवानाम्) दिव्य (शक्तियों और लोगों) का (सुमतौ) सुन्दर मन और बुद्धि (स्याम) बनो।

नोट :- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.4, ऋग्वेद 7.41.4 और यजुर्वेद 34.37 में समान है।

व्याख्या:-

जीवन के सुखों को प्राप्त करते हुए हमारे मन की क्या अवस्था होनी चाहिए?

प्रातः वेला के इस समय सुखों, वैभव और महिमा के स्वामी बनो और सूर्योदय के समय तथा दिन के बीच में भी सर्वोत्तम सुखों को प्राप्त करते हुए हम सब दिव्य लोगों के अच्छे मन और बुद्धि में स्थापित हो सकें।

जीवन में सार्थकता:-

हमें दिव्य (शक्तियों और लोगों) के साथ नियमित संगति और उनका मार्गदर्शन क्यों बनाकर रखना चाहिए?

मानव जीवन के चार लक्ष्य अर्थात् पुरुषार्थ चतुष्टय क्या हैं?

जब कोई व्यक्ति जीवन में हर प्रकार के सुखों और सम्पदाओं को प्राप्त करना प्रारम्भ कर देता है तो इसकी प्रबल सम्भावनाओं होती है वह उन सुखों और सम्पदाओं के संग्रहण की अंधी दौड़ और तीव्र कर दे, अहंकार का विकास कर ले, अन्यो के प्रति अपने दायित्वों को अनदेखा कर दे और मानव जीवन के लक्ष्य अर्थात् परमात्मा की अनुभूति को भी अनदेखा कर दे।

इसलिए ऐसी सभी सम्भावनाओं को दूर रखने के लिए तथा मानव जीवन के लक्ष्य से भटकाव को दूर रखने के लिए यही श्रेयष्कर है कि हम महान् और दिव्य मन वाले लोगों की संगति और उनके मार्गदर्शन में स्थापित रहें, केवल यदा-कदा नहीं बल्कि सारा जीवन और प्रतिक्षण।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171





दिव्य मन वाले लोगों की संगति हमें पुरुषार्थ चतुष्टय अर्थात् मानव जीवन के चार लक्ष्यों का स्मरण कराती रहती है – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष अर्थात् उचित व्यवहार, भौतिक सम्पदा की सार्थकता, इच्छाओं की पूर्ति और मुक्ति के लिए परमात्मा की अनुभूति। बीच के दो लक्ष्य अर्थात् अर्थ और काम, धर्म पर आधारित होने चाहिए और अन्तिम लक्ष्य मोक्ष पर केन्द्रित होने चाहिए।

सूक्ति :- (वयम् देवानाम् सुमतौ स्याम – अथर्ववेद 3.16.4, ऋग्वेद 7.41.4 और यजुर्वेद 34.37) हम सब दिव्य लोगों के अच्छे मन और बुद्धि में स्थापित हो सकें।

### अथर्ववेद 3.16.5

भग एव भगवाँ अस्तु देवस्तेना वयं भगवन्तः स्याम।  
तं त्वा भग सर्व इज्जोहवीमि स नो भग पुरेता भवेह।।5।।

(भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (एव) केवल (भगवान्) सर्वोच्च स्वामी (अस्तु) हो (देवः) दिव्य (शक्तियाँ और लोग) (तेन) उससे (वयम्) हम (भगवन्तः) सभी सुखों, वैभव और महिमा से सम्बद्ध (स्याम) हो (तम्) वह (त्वा) आपका (भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (सर्व) सब (इत्) यहाँ (जोहवीमि) मैं बुलाता हूँ, प्रशंसा करता हूँ (सः) वह (नः) हमें (भग) सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला (पुरः एता) हमारा नेतृत्व करते हुए, हमें प्रगतिशील बनाते हुए भव) हो (इह) यहाँ, इस जीवन में।

नोट:- यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.5, ऋग्वेद 7.41.5 और यजुर्वेद 34.38 में एक शब्द के अन्तर के साथ समान है। ऋग्वेद 7.41.5 और यजुर्वेद 34.38 में 'जोहवीति' आया है जबकि अथर्ववेद 3.16.5 में 'जोहवीमि' शब्द है। किन्तु अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं है।

व्याख्या:-

सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला सर्वोच्च स्वामी कौन है?  
सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाला केवल एक ही सर्वोच्च स्वामी है। हम, उसके दिव्य लोग, सभी सुखों, वैभव और महिमा से सम्बद्ध रहें।  
सभी सुखों, वैभव और महिमा का देने वाले! आपके सभी लोग और मैं आपको यहाँ बुलाते हैं और आपकी प्रशंसा करते हैं। वह, सभी सुखों, वैभव और महिमा को देने वाला, हमारा नेतृत्व करे और हमें यहाँ, इस जीवन में प्रगतिशील बनायें।

जीवन में सार्थकता:-

हमें दिव्य कौन बना सकता है और इस दिव्यता को बनाये रखने में सहायता कौन कर सकता है? देखने में, प्रत्येक बालक यह महसूस करता है कि उसको सभी सुख देने वाले उसके माता-पिता हैं। इसी प्रकार, नौकरी करने वाले सभी लोग यह महसूस करते हैं कि उनके नियोक्ता उन्हें सम्पदा देने वाले होते हैं। बेशक, क्रियात्मक रूप से यह सत्य है, परन्तु, आध्यात्मिक रूप से, हमें यह अनुभूति

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



प्राप्त करनी चाहिए कि सभी सुखों का वास्तविक सर्वोच्च स्वामी और हमें देने वाला केवल परमात्मा ही है।

उसके सर्वोच्च खजाने में से हमें अपना हिस्सा हमारे पूर्व कर्मों के अनुसार ही मिलता है। इसलिए हमें उस सर्वोच्च स्वामी को बुलाना चाहिए और उसकी प्रशंसा करनी चाहिए जो हमें भविष्य में प्रगति के लिए अच्छे प्रकार से नेतृत्व दे सकता है। भगवान के साथ सम्पर्क हमारी प्रकृति और व्यवहार को दिव्य बना सकता है। इसी प्रकार अपने पारिवारिक और सामाजिक जीवन में हमें अपने माता-पिता तथा नियोक्ताओं के साथ विनम्र सम्बन्ध बनाकर रखने चाहिए, क्योंकि परमात्मा इन वरिष्ठ लोगों के माध्यम से ही सभी सुखों को हमें देता है।

### अथर्ववेद 3.16.6

समध्वरायोषसो नमन्त दधिक्रावेव शुचये पदाय।  
अर्वाचीनं वसुविदं भगं मे रथमिवाश्वा वाजिन आ वहन्तु।।6।।

(सम — नमन्त से पूर्व लगाकर) (अध्वराय) अहिंसक और शुभ गुण वाले व्यवहार के लिए (उषसः) ऊषाकाल में ब्रह्मवेला में (नमन्त — सम नमन्त) समुचित रूप से हमारे नमन प्रस्तुत हैं (दधिक्रावा इव) पीठ पर बोझ लादे हुए एक अश्व की तरह, एक संकल्पवान व्यक्ति की तरह (शुचये) पवित्रता के साथ (पदाय) लक्ष्य प्राप्त करने के लिए (अर्वाचीनम्) नया (वसुविदम्) सम्पदा प्राप्त करते हुए (भगम्) समस्त सम्पदा का देने वाला (मे) मुझे (रथम् इव अश्वा) रथ को खींचते हुए एक अश्व की तरह (वाजिनः) विशेष बुद्धि (आ वहन्तु) लक्ष्य तक ले जाता है।

नोटः— यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.6, ऋग्वेद 7.41.6 और यजुर्वेद 34.39 में एक शब्द के अन्तर के साथ समान है। ऋग्वेद 7.41.6 और यजुर्वेद 34.39 में 'नः' आया है जबकि अथर्ववेद 3.16.6 में 'मे' का प्रयोग हुआ है। 'नः' का अर्थ है हमें और 'मे' का अर्थ है मुझे। इस प्रकार अर्थ में कोई विशेष अन्तर नहीं आता।

व्याख्याः—

ऊषाकाल के लाभों के साथ कौन जुड़ता है?

सूर्योदय से पूर्व, ऊषाकाल, ब्रह्मवेला में हम अहिंसक व्यवहार प्राप्त करने के लिए तथा पीठ पर बोझ लादे हुए एक अश्व के समान अर्थात् एक संकल्पवान व्यक्ति के समान हम अपने लक्ष्य की तरफ बढ़ते हुए अपना नमन प्रस्तुत करते हैं।

सभी सुखों को देने वाले की तरह, सभी नई सम्पदाओं को प्राप्त करते हुए, विशेष विद्वान् लोग मेरा मार्गदर्शन लक्ष्य की तरफ करें जैसे एक अश्व रथ को खींचता है।

जीवन में सार्थकताः—

ऊषाकाल में विशेष क्या होता है?

विशेष विद्वान् कौन होते हैं?

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM  
Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.  
For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



सूर्योदय, ऊषाकाल, ब्रह्मवेला उन लोगों के लिए अत्यन्त फलदायक है जो अपने जीवन को अहिंसक और पवित्र बनाकर एक संकल्पशील व्यक्ति की तरह अपने लक्ष्य की तरफ प्रगति करना चाहता है। प्रत्येक प्रातःकाल सर्वोच्च शक्ति, परमात्मा, सक्रियता, ऊर्जा, ज्ञान और स्वाभाविक रूप से पवित्रता के खजाने खोल देता है।

विशेष विद्वानों से अभिप्राय है वे लोग जिन्होंने दिव्य निर्देशों को समझ लिया है और अपना लिया है। ऐसे लोगों की तुलना रथ को खींचने वाले अश्वों से की जाती है, क्योंकि उनका जीवन वास्तव में हमें भी उनका अनुसरण करने की प्रेरणा देता है। वे लोग केवल ज्ञान का बंडल नहीं हैं, बल्कि वे दिव्यता के कार्यवाहक हैं।

### अथर्ववेद 3.16.7

अश्वावतीर्गोमतीर्न उषासो वीरवतीः सदमुच्छन्तु भद्राः।  
घृतं दुहाना विश्वतः प्रपीता यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥१७॥

(अश्वावती) ऊर्जा को धारण करते हुए (गोमतीः) सर्वोत्तम और विनम्र वाणियों को धारण करते हुए (नः) हमारा (उषासः) सूर्योदय से पूर्व ऊषाकाल, ब्रह्मवेला (वीरवतीः) बहादुर पुत्रों को धारण करते हुए (सदम्) घर को (उच्छन्तु) प्रकाशित करो (भद्राः) श्रेष्ठ और कल्याणकारी कार्यों को करते हुए (घृतम् दुहानाः) दूध की वर्षा करते हुए (विश्वतः प्रपीताः) सभी दिशाओं से स्वस्थ रहो (यूयम्) तुम (पात) संरक्षण करो (स्वस्तिभिः) कल्याण के साथ (सदा) सदैव (नः) हमें।

नोटः— यह मन्त्र अथर्ववेद 3.16.7, ऋग्वेद 7.41.7 और यजुर्वेद 34.40 में समान है।

व्याख्याः—

ऊषा हमारे लिए क्या कर सकती है?

ऊषा, सूर्योदय से पूर्व की किरणें, आप ऊर्जा धारण करते हो, सर्वोत्तम और विनम्र वाणियाँ धारण करते हो और बहादुर पुत्रों को धारण करते हो; आप सभी श्रेष्ठ और कल्याणकारी कार्यों को करते हो। कृपया हमारे घरों को प्रकाशित करो। आप दूध की वर्षा करते हुए अपने कल्याण से सदैव हमारा संरक्षण करते हो ताकि हम सभी दिशाओं से स्वस्थ रह सकें।

जीवन में सार्थकताः—

श्रद्धावान् महिलाओं की तुलना ऊषा से क्यों की जाती है?

ऊषाकाल में उठने के अनेक प्रकार के लाभ हैं। कोई भी व्यक्ति इनका अनुभव कर सकता है। सभी ऋषियों, महान् और दिव्य संतों के जीवन यह सिद्ध करते हैं कि प्रातः जल्दी उठने वालों पर दिव्यता बरसती है। घर में समर्पित महिलाओं की तुलना ऊषा से की जाती है, क्योंकि वे प्रातः जल्दी उठकर समूचे परिवार के लिए सौभाग्य के द्वार खोलती हैं, परमात्मा की भक्ति का वातावरण उत्पन्न करते हुए समूचे परिवार को भक्ति मार्ग पर चलने की प्रार्थना और प्रेरणा देती हैं।

HOLY VEDAS STUDY AND RESEARCH PROGRAM

Download Vedic Pedia app from play store or join on Telegram app.

For any query feel free to contact on thevedicpedia@gmail.com or whatsapp 0091-9968357171



**This file is incomplete/under construction**